भजन

फिर याद आ रहें हैं,बीते हुए नजारे
सरकार बैठे सामने,मुस्कुरायें और पुकारें

1- हर शह में वो ही जलवा,हर शह में वोहि सूरत
फिर भी सूना है आलम,सूनी सभी फिजायें

2- मेले भण्डारे होंगे,और होते ही रहेंगे
लेकिन वो दिन न होंगे,तेरे साथ जो गुजारे

3- बातून में तुम हीं तुम,मेरे दिल में हो समाए
जाहेरी का यह बिछुड़ना, सहना कठिन हुआ रे

4- ख़ामोश यूं न बैठो,कोई बात हमसे कर लो
कुछ आज हमसे कह दो,कुछ सुन लो हाल हमारे